ज़ंजीरो को तोड़ कर

जुही जैन

घुट-घुट कर जीती रही सुमन

सुमन अपने मां-बाप की लाड़ली बेटी थी। स्वभाव से हंसमुख और मिलनसार। पिता की आमदनी ज्यादा नहीं थी। इसलिए जब राकेश ने खुद सुमन से शादी करने का प्रस्ताव रखा तो उन्होंने खुशी-खुशी मान लिया। सोचा, पढ़ा-लिखा घर-वर है। लड़की खुश रहेगी।

शादी के बाद पहली करवा चौथ आई। ससुराल में बड़े चाव से तैयारी हुई। पर सुमन ने व्रत करने से इंकार कर दिया। सास का मुंह चढ़ गया। एक तो अपने मन की शादी, उस पर यह तेवर। पति परमेश्वर होता है। पति ने भी समझाया। मां का कहना मान लेने में हर्ज ही क्या है। हार कर सुमन ने सास की बात मान ली।

पूरा दिन सुमन ने पानी भी नहीं पीया। जब काफ़ी रात गए राकेश नहीं लौटा तो उसने व्रत खोल लिया। रस्म के लिए लोटे की पूजा कर ली। सास गुस्से से आग-बबूला हो उठी। 'करमजली को मां-बाप ने कुछ नहीं सिखाया। मेरा नौ-हाथ का बेटा जीता रहे और यह लोटा पूज रही है। हे भगवान इसकी मति मारी गई है।'

इधर सुमन खाना खाकर उठी। उधर खबर आ गई। राकेश शराब पीकर गाड़ी चला रहा था। ट्रक से टकरा गया। घटना स्थल पर ही दम तोड़ दिया।

पति क्या गया, सुमन की दुनिया उजड़ गई। उसका सर मूंड दिया। सब श्रृंगार उतार लिए। और घर के एक कोने में डाल दिया। सास कहती, 'कुलछिनी, बेटे को खाकर भी जिंदा है। मनहूस, ना लोटा पूजती, ना बेटा जाता'।

मां-बाप कहते, 'अब जैसा भी है तेरा घर वही है। तेरा जीना मरना वहीं है।'

तो फिर सुमन जाए कहां? वह खून के आंसू पीती रही। घुट-घुट कर जीती रही। आखिर क्या करती। वह मजबूर थी।

पति के साथ सती हो गई रूपा

अभी रूपा को सोलह साल पूरे भी नहीं हुए थे कि ससुराल वाले गौना लेने आ गए। रूपा की मां ने बहुत मना किया, पर बाप नहीं माना।

बाली उमर क्यूं ब्याह रचायो
भूत भविष्य भयो अंधियारो
क्यूं न हमको पाठ पढ़ायो
कच्ची उमर में फल उगायो
दोष भयो क्या मोरो इसमें
अबला कह कमज़ोर बनायो
भान हुयो तो अब मैं जागी
पढ़ने की ज़िद मन में ठानी
उमर नहीं दावात कलम की
आंख खुली जद शुभ दिन आयो
घर-घर जाय सबने जगासूं
बाल-विवाह को बंद करवासूं
पोथी-पाटी हाथ थमासूं
झांसी-दुर्गा याद दिलासूं
सबला बन जीना सिखलासूं
औरत को उसकी पहचान करासूं

मुन्नी पुरोहित

सूर्यवंशी राजपूत खानदान की बेटी है। गांव में मान है। विदा करनी ही होगी। मां ने बेटी को सीख दी, 'हम राजपूत हैं, किसी को अपनी पीठ नहीं दिखाते। तेरे बाप की पगड़ी की लाज तेरे हाथ में है। किसी को शिकायत का मौका न मिले।'

रूपा का पति खेतों में काम करता। रूपा सास-ससुर की सेवा करती। सब उससे बहुत खुश थे। फिर अब तो उसका पैर भी भारी था। मायके से फल-मेवे के थाल आए। ससुराल में ढोल-ताशे बजे।

पर किस्मत का लेखा कौन टाले। एक दिन पति को खेत में सांप डस गया। रूपा विधवा हो गई। सारा गांव दुखी था। छोटी उम्र और इतनी नेक बहू। खैर जो होना था हो गया। राजपूत थे। भाग्य में पति का साथ न था। अब सती होकर मोक्ष को जाएगी, गांव की इज्जत बढ़ाएगी। राजपूत खानदान की मर्यादा की रक्षा करेगी। हवन की तैयारी हुई। रूपा का श्रृंगार किया गया। पर रूपा मना कर रही थी।

लोगों पर जैसे जुनून सवार था। आंखों में श्रद्धा थी। जयकार हवा में गूंज रही थी। रूपा सती माता बनने जा रही है। पतिव्रता है, सती है। और रूपा घायल हिरनी की भांति सबको देख रही थी।

धू-धू करके चिता जली। और जिंदा जली रूपा। किसी को उसकी चीख पुकार सुनाई न दी। उसे देवी बनाया गया। जबर्दस्ती। और वह लाचार थी। आखिर करती भी क्या?

जानकी कहां है, कौन जाने

आज पूर्णिमा है। रालेगांव में मेला जुटा है। गरीब हरिजन और श्रांवंथी बहुत खुश हैं। उनकी बेटी जानकी का बुलावा आया है। येलम्मा देवी की सेवा के लिए। जानकी भी आज बहुत खुश है। उसे लाल कांजीवरम की साड़ी मिली है। बालों में फूल की वेणी है। माथे पर लाल बिंदिया। पैरों में पाजेब। आज उसकी शादी है देवी मां के साथ। पंडित जी आए। मंत्र पढ़े। फिर लाल-सफेद मोतियों की माला पहनाई। अब जानकी सुहागिन है।

पांच साल गुजर गए जानकी के ब्याह को। आज फिर पूर्णिमा है। पर क्या बात आज जानकी खुश नहीं है। खुश कैसे हो। आज उसे देवदासी बनाया जाएगा। जब शादी हुई थी तो उसे पता ही नहीं था कि क्या हो रहा है। पर आज मन करता है कहीं भाग जाए। पर कहां जाए?

पूरा गांव खुश है। मां-बाप सौभाग्यशाली समझ रहे हैं खुद को। एक बार फिर पंडित जी आए। उनकी आंखों में जैसे दुनिया भर की वासना थी। मुंह से जैसे लार टपक रही थी।

जानकी को आज फिर पूरे गांव में घुमाया गया। हर घर से उसे कुछ न कुछ उपहार मिला। गहने, रुपये, अनाज। फिर उसे मंदिर ले जाया गया। सब लोग बाहर खड़े रहे। केवल पंडित जी उसके साथ गुफा में गए। वहां उसे पंडितजी की मौजूदगी में नग्न होकर देवी येलम्मा की पूजा करनी थी। फिर पंडित जी ने उसके साथ सहवास किया। अब वह देवदासी थी। मंदिर की जायदाद। लोगों में प्रसाद बंटा। और सब देवी का गुणगान करते घर को चले गए।

और जानकी, वह क्या करे? अब उसे इस मंदिर में रोज किसी नए पुरुष की हवस का शिकार बनना पड़ेगा। कैसे जीए जानकी। क्या करे, किससे मदद मांगे। कैसे समझाए लोगों को यह मान नहीं, अपमान है।

हम भी पूछें सवाल

सास के रोज़ के तानों और मां-बाप से कोई सहारा न मिल पाने की वजह से सुमन तंग आ गई। हार कर उसने जहर खाकर आत्महत्या कर ली।

रूपा जिस जगह सती हुई वहां मंदिर बनाया गया। हर साल वहां मेला जुड़ता है। सास-ससुर, मां-बाप कहते हैं यह सब देखकर रूपा की आत्मा बहुत प्रसन्न होगी।

जानकी को खुद अपने आप से नफरत हो गई। एक दिन आधी रात को वह ना जाने कहां चली गई। उसका आज तक कोई पता नहीं चला है।

सुमन, रूपा और जानकी की जिंदगी हमारे अपने जीवन से कितनी मिलती-जुलती है। यह घटनाएं अपने आप में अनोखी नहीं हैं। हम सब इनका शिकार हैं।

तो सवाल है, इनकी इस स्थिति का जिम्मेवार कौन है। मां-बाप, समाज, पति या हम खुद। सवाल यह भी है कि रिवाजों, इज्जत और मर्यादा के नाम पर औरतें कब तक जुल्म सहती रहेंगी। अपनी स्थिति के लिए भाग्य को कब तक दोषी बनाती रहेंगी। आप ही बताएं।

अगर सुमन लोटा ना पूजती तो क्या उसका पति बच जाता?

क्या रूपा का सती होना, मर्यादा बरकरार रखने के लिए जरूरी था?

क्या जानकी वास्तव में देवी की सेवा कर रही थी?

जवाब है, नहीं।

तो फिर हम क्या यह मान लें कि समाज में

हमें सम्मान का दर्जा तभी मिलेगा जब हम देवी बनकर जीएं। क्या हम आम इंसान बनकर सम्मान और हक के अधिकारी नहीं?

हम जानते हैं कि संसार की आबादी का आधा हिस्सा औरतें हैं। वे घर, परिवार, समाज की जिम्मेवारी बखूबी से निभाती हैं। फिर ये हक़ उन्हें क्यों नहीं मिलते। अगर औरतों के गिरे हुए दर्जे का जिम्मेवार समाज है, जो इस समाज को बदलना होगा। इसकी व्यवस्था को बदलना होगा।

हमारे ही देश के नीलगिरि पहाड़ पर रहती है टोडा आदिवासी जाति। इस समाज में औरतें किसी से कम नहीं। सभी हक़ उनके पास हैं। क़ानून बनाने और निर्णय लेने में उनकी मर्जी की उतनी ही अहमियत है जितनी पुरुषों की। अगर वहां ऐसा है तो क्या हमें यह हक़, यह सम्मान पाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए? □

जुल्म के खिलाफ

खामोश रहने से कभी
हक़ नहीं मिला करते
अपने अधिकारों के लिए
खुद ही लड़ना पड़ता है
कमज़ोर मत समझो खुद को
तुम अबला कहां हो?
सत्य साथ है, मन में है दृढ़ता
फिर क्या डरना, क्यों दबना?
आत्मविश्वास भरो मन में
उठो! अपने स्वरों में जान डालो
मूक आह्वान को शब्द दो
बहुत हो चुका, बहुत सह लिया
अब और नहीं, अब और नहीं!!

सरला अग्रवाल